शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन →

प्रबन्धन मनुष्य की सभी क्रियाओ अंतर्व्याप्त है। यह सभी प्रकार की सामूहिक और संगठित क्रियाओं को एकीकृत करने की शक्ति है। इसके अतिरिक्त संसाधनो को इस तरह से संगठित और उपयोग करना पड़ता है कि अनुकूलतम परिणामो की प्राप्ति हो सके पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मानवी प्रयासो और संसाधनो को एकीकृत करके उन्हे कार्यात्मक और फलदायक बनाने की प्रक्रिया को प्रबन्धन कहा जाता है। प्रत्येक शिक्षण संस्थान एक संगठन के रूप मे कार्य करता है। जिसका उद्देश्य छात्रो का चहुंमुखी विकास करना होता है। यह संगठन चार प्रकार के तत्वो से मिलकर बना होता है।

① <u>भौतिक</u> – Physical → इसके अन्तर्गत विद्यालय भवन, फर्नीचर, पुस्तकालय प्रयोगशाला, वर्कशॉप, खेल का मैदान, छात्रावास श्रव्य दृश्य सामग्री आदि आते है।

<u>मानवीय</u> Human → इसके अन्तर्गत छात्र शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्राचार्य प्रबन्धन कमेटी के सदस्य प्रयोगशाला क्लर्क, शिक्षा विभाग के कर्मचारी/अधिकारी, पर्यवेक्षक आदि शामिल है।

शैक्षिक प्रशासन →

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। जिसका मुख्य उद्देश्य एवं कार्य अधिकाधिक उपलब्धि प्राप्त कर राष्ट्र तथा समाज का अधिकतम विकास करना है।

शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबन्धन द्वारा शिक्षा के अपव्यय को कम कर अधिकतम उपलब्धि करायी जा सकती है।

साथ ही साथ शैक्षिक प्रशासन द्वारा शैक्षिक प्रबन्ध की सतत पूर्ति को निश्चित किया जा सकता है।

अब प्रश्न उठता है। कि शैक्षिक प्रशासन का विकास कैसे हुआ अतः इसके विकास का सूक्ष्म रूप अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि शैक्षिक प्रशासन आज की देन नही है। वस्तुतः राज्य की उत्पत्ति के साथ-साथ शैक्षिक प्रशासन का विकास हुआ है।

किसी भी राष्ट्र या राज्य में कुशल एवं सफल संचालन तथा सामाजिक व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रत्येक युग में शैक्षिक प्रशासन तथा शिक्षा के सिद्धान्तो, नियमों तथा तत्वो का सहारा लिया है। शिक्षा के वांछित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए प्रशासनिक ढाँचे मे रखा जाता है। तथा प्रशासनिक ढाँचे के अनुसार शिक्षा की संचालन किया जाता है।

विभिन्न युगो मे समय की प्रकृति तथा आवश्यकता के अनुरूप शैक्षिक प्रशासन की अवधारणा मे परिवर्तन होता रहा है।

वस्तुत: शैक्षिक प्रशासन का विकास भी अन्य सरकारी सत्ता, व्यापार, वाणिज्य, सैनिक प्रशासन आदि के विकास की भांति ही हुआ क्योंकि विभिन्न प्रशासनों की प्रक्रिया के आधारभूत तत्व एक समान ही होते हैं। इस प्रकार प्रत्येक प्रशासन की क्रियाओं के अन्तर्गत नियोजन, संगठन, समन्वय, नियन्त्रण एवं मूल्यांकन आदि तत्वों को सम्मिलित किया जाता है।

अत: प्रशासन के सामान्य सिद्धान्तों अवधारणाओं का प्रभाव शैक्षिक प्रशासन की अवधारणाओं, नियमों तथा इनके सिद्धान्तों के विकास पर पड़ता है। शैक्षिक प्रशासन के विकास क्रम को मुख्यत: तीन काल क्रम मे विभाजित किया जा सकता है।

A → शैक्षिक प्रशासन का परम्परागत काल
B → 1900 - 1930

B → शैक्षिक प्रशासन का संक्रमण काल
1930 - 1970

C → शैक्षिक प्रशासन का आधुनिक काल
1970 के बाद अब तक